वर्ण और उसके भेद

वर्ण की परिभाषा- (1) वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसका ***खण्ड या टूकडे*** **नहीं** होते हैं। (वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2) भाषा की **लघुतम इकाई** को वर्ण कहते हैं।

जैसे- लता पुस्तक पढ़ती है। वाक्य में चार शब्द है।(1)लता (2) पुस्तक (3)पढ़ती (4)है। **प्रत्येक शब्द के खण्ड करने पर प्रत्येक पृथक-पृथक इकाई जो हमारे हाथ लगती है,वही वर्ण हैं।** जैसे-'पुस्तक'- प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ-- इस प्रकार पुस्तक शब्द में **सात** वर्णो का प्रयोग हुआ है।इन सात ध्वनियों में किसी का भी खण्ड नहीं हो सकता,अत:ये वर्ण हैं।

वर्णमाला-(वर्णों का वर्गीकरण) किसी भाषा के समस्त वर्ण-समूह को वर्णमाला कहते हैं।हिंदी में कुल 52 वर्ण है।

हिन्दी में दो प्रकार के वर्ण है-स्वर वर्ण और व्यंजन वर्ण-

स्वर वर्ण- हिंदी में पहले 11 स्वर- अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,ऋ स्वीकृत है अब ऑ भी स्वीकृत स्वर है।

परिभाषा- (1) स्वर उन वर्णो को कहते हैं जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्नबाधा से होता है।(वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2)स्वर वह ध्वनि है,जिनके उच्चारण करते समय हवा अबाधगति से मुखविवर से से निकल जाती हो।(भोलानाथ तिवारी)

हिंदी स्वरों का वर्गीकरण-

(1)मात्रा के आधार पर - (क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्ध स्वर

(क)ह्रस्व स्वर-जिनका उच्चारण सामान्य समय में होता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे- अ, इ, उ, ऋ आदि।

(ख) दीर्घ स्वर- जिनका उच्चारण ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय में हो उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।जैसे-आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,आदि

(2)जीभ की स्थिति की के आधार पर-

(क)जीभ का कौन सा भाग उठता है-(i)अग्र (ii)मध्य(iii) पश्च

(ख)मुखविवर कितना खुला रहता है-(i)संवृत(ii)अर्धसंवृत(iii) अर्धविवृत(iv) विवृत

	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	इ,ई		उ,ऊ
अर्धसंवृत	ए,		ओ
अर्धविवृत	ऐ	अ	औ
विवृत			आ

(3)उच्चारण करते समय हवा मुख(मौखिक),नाक(अनुनासिक) के रास्ते निकलने पर- (क)मौखिक- अ.आ,इ,ई,उ,ऊ,ए.ऐ,ओ,औ,ऑ

(ख)अनुनासिक-अँ,आँ,इँ,ईँ,उँ,ऊँ,एँ,ऐँ,ओँ,औँ,ऑँ

(4)ओष्ठ की स्थिति के आधार पर-कुछ स्वरों के उच्चारण में होठ गुलाई(वृत्तकार)या फैले हुए(अवृत्ताकार)रहते हैं उसी आधार पर दो प्रकार-

वृत्तमुखी-उ,ऊ,ओ,औ

अवृत्तमुखी-अ,आ,इ,ई,ए,ऐ,

हिर्दी व्यंजन वर्ण-

परिभाषा- (1)स्वर की सहायता से बोला जाए उसे व्यंजन कहते हैं।(वासुदेवनंदन प्रसाद) (2) व्यंजन वह ध्वनि है,जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुखविवर

नहीं निकल पाती है। (भोलानाथ तिवारी)

हिंदी व्यंजन के प्रकार - व्यंजन के मुख्य तीन प्रकार है।(1)स्पर्श व्यंजन(2)अंतस्थ व्यंजन(3)उष्म व्यंजन

(1)स्पर्श व्यंजन-जीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ आदि किसी न किसी भाग के स्पर्श से उच्चरित व्यंजन को स्पर्श व्यंजन कहते हैं।जिनके मुख्य पाँच वर्ग हैं -

क वर्ग	क	ख	ग	ध	ङ	(कंठ)
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	(तालु)
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	(मुर्धा)
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	(दंत)
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	(होठ)

(2)अतंस्थ व्यंजन- ये जीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ को परस्पर सटाने से होता है,किंतु पूर्ण स्पर्श नहीं होता है। ये चार हैं-य,र,ल,व।

(3)उष्म व्यंजन-उच्चारण से एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न वायु से होता है। ये चार हैं-श,ष,स,ह

प्राणत्व के आधार पर- प्राणत्व के आधार पर व्यंजन के दो प्रकार है।-

(क)अल्पप्राण (ख)महाप्राण

(क)अल्पप्राण-प्राण का अर्थ है वायु और अल्प का अर्थ है थोडा अर्थात् जिनके उच्चारण में थोडा परिश्रम करना पडता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का पहला ,तीसरा और पांचवाँ वर्ण अल्प प्राण है।अंतस्थ व्यंजन भी इसी कोटि में आते हैं।

(ख)महाप्राण- महा का अर्थ ज्यादा। अर्थात् जिनके उच्चारण में अधिक परिश्रम करना पडता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का दूसरा , और चौथा वर्ण महाप्राण है। अग्रेंजी में हवा के लिए 'H' प्रयोग होता है।इसी कारण इसी वर्ग की प्रत्येक

ध्वनि के लिए अंग्रेजी में H का प्रयोग होता है।

संज्ञा

संज्ञा की परिभाषा-(1)**वासुदेवनंदन प्रसाद**-"संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिससे किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति के नाम का बोध हो।" (आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना) (2)**कामताप्रसाद गुरु**-"वस्तु का नाम सूचित करने वाले शब्द को व्याकरण में संज्ञा कहते हैं। (संक्षिप्त हिंदी व्याकरण)"

(3)**डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल**- "किसी वस्तु,व्यक्ति, प्राणी या पदार्थ अथवा इसके गुणाक्रियादिक धर्मो को सूचित करनेवाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।" (हिंदी व्याकरण) **संज्ञा के प्रकार**- हिंदी व्याकरण में संज्ञा के **पॉच** प्रकार हैं- (1)व्यक्तिवाचक संज्ञा(2) जातिवाचक संज्ञा(3)समूहवाचक संज्ञा (4)द्रव्य वाचक संज्ञा(5)भाववाचक संज्ञ (1)**व्यक्तिवाचक संज्ञा**-जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-कृष्ण, हिमालय, काशी..... दीमशित्स के अनुसार संज्ञा की सूची(1)व्यक्तियों के नाम- **किशन,राधा,हिमांक** (2) दिशाओं के नाम- **उत्तर.दक्षिण,पूर्व**....आद (3) दिनों,महीनों के नाम-**सोमवार, जनवरी**.आदि

(4) नदियों के नाम- **गंगा, सिंधु** आदि

(5)नगरों,सडकों के नाम- **काशी, सरदार पटेल मार्ग** आदि

(6)पर्वतों के नाम- **हिमालय,गिरनार** आदि..

(2)जातिवाचक संज्ञा-जिस शब्द से किसी **वस्तु या व्यक्ति की जाति के नाम का बोध** हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-नदी कहने से सभी प्रकार की नदियों का बोध होता है,किसी एक नदी का नहीं। निम्नलिखित उदाहरण-

(1) पदों,व्यवसायों, संबंधियों के नाम-**प्राध्यापक, जुलाहा,भाई-बहन** आदि

(2)पशु-पक्षियो के नाम- **घोड़ा,मयूर, चातक**आदि।

(3)प्राकृतिक तत्त्वों के नाम-**बिजली, वर्षा, तूफान** आदि।

(4) वस्तुओं के नाम- **कलम,किताब,घड़ी**।

(**3)समूहवाचक संज्ञा-**जिस शब्द से किसी **वस्तु या व्यक्ति के समूह के नाम का बोध** हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-

(1)व्यक्तियों का समूह-**सभा, दल,भीड़,संघ**

(2)वस्तुओं का समूह-**गुच्छा, लताकुंज**।

(4)द्रव्यवाचक संज्ञा-जिस शब्द से **किसी नाप-तौलवाली अथवा ढेर राशी के नाम का बोध** हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-सोना,पानी,बाजरा।

(5)भाववाचक संज्ञा-जिस संज्ञा से **व्यक्ति या वस्तु के गुण,धर्म,या दशा अथवा व्यापार आदि के नाम का बोध** होता है,उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

(1)संज्ञाओं से-**जशुगीरी,दादागीरी,बूढापा**

(2)क्रिया से-दौड़ना-**दौड़, सजाना-सजावट**।

(3)अव्यय-*दूर-**दूरी,***

(4)सर्वनाम से- अपना- **अपनापन**।

,,,,,,,,,.....

सर्वनाम

परिभाषा-

(1)वासुदवनंदन प्रसाद- "संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं।"

(2)पं.कामताप्रसाद गुरु- "सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बंधं से किसी भी संज्ञा के बदले आता है।"

(3)डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल- "संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले विकारी शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।" हिंदी में कुल सर्वनाम 11 हैं। जैसे- मैं.तुम, यह, वह इत्यादि

सर्वनाम के प्रकार- प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के 6 भेद हैं।

(1)पुरुषवाचक सर्वनाम- पुरुष या स्त्री के नाम के बदले जो सर्वनाम आते हैं। हिंदी में कुलतीन प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनाम है।

(1)उत्तम पुरुष-वक्ता अथवा लेखक अपने लिए जिन सर्वनाम का प्रयोग करे । जैसे- मैं,हम।

(2)मध्यम पुरुष-वक्ता अथवा लेखक श्रोता के लिए अपने लिए जिन सर्वनाम का प्रयोग करे। जैसे- तू,तुम,आप।

(3)अन्य पुरुष-वक्ता अथवा लेखक अन्य के लिए जिन सर्वनाम का प्रयोग करे। जैसे- यह,वह। पास के लिए-यह और दूर के लिए-वह

(2)निजवाचक सर्वनाम-"जो सर्वनाम किसी निज संज्ञा के उद्देश्य को स्पट करे वह सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम है।" उसका सार्वनामिक रूप'आप'है।जिसके तीन रूपों में

प्रयोग होता है।-

(i)दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए- उदा.- वह औरों को नहीं अपने आप को सुधार रहा है।

(ii)सर्वसाधारण अर्थ के लिए- उदा. आप भला तो जग भला।

(iii)अवधारणा(निश्चय)के अर्थ के लिए- उदा.मैं यह काम आप ही कर लूंगा। अथवा घास आप ही उगती है।

(3)निश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध हो,उसे..(1)पास की वस्तु के लिए-यह सर्वनाम उदा.यह मेरी पुस्तक है। (2)दूर की वस्तु के लिए-वह सर्वनाम उदा.वह तेरी पुस्तक है।

(4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।जैसे-कोई,कुछ. उदा.-तेरे मन में कुछ तो है। कोई मिल गया।

(5) सम्बन्धवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाय उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। उसके दो सार्वनामिक रूप है-जो-सो उदा.(1)जो डर गया सो मर गया। (2)जो चाहो सो ले लो।,

(6) प्रश्नवाचक सर्वनाम-प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनाम का प्रयोग होता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। उसके दो सार्वनामिक रूप है-कौन,क्या उदा.कौन है जो मेरे दिल में समाया जाता है? क्या खूब लगती हो?

(1) कौन का प्रयोग चेतन जीवों के लिए होता है।

(2) क्या का प्रयोग जड़ जीवों के लिए होता है।

विशेषण-

परिभाषा-(1)**वासुदेवनंदन प्रसाद-** "जो संज्ञा और विशेषण की विशेषता बताएँ उसे विशेषण कहते हैं।" (आ.हिंदी व्या. और रचना)

(2)**कामताप्रसाद गुरु**- "संज्ञा के अर्थ में विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।" (संक्षिप्त हिंदी व्याकरण)

(3)**उमेशचंन्द्र शुक्ल**-"संज्ञा का गुण बताकर उसकी व्याप्ति मर्यादित करनेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं।" (हिंदी व्याकरण)

जैसे- **काला कृष्ण** में **काला** शब्द कृष्ण की संज्ञा का अर्थ मर्यादित करता है। **प्रकार-रचना की दृष्टि से विशेषण के मूल दो प्रकार है-विकारी विशेषण , अविकारी विशेषण** -

विकारी विशेषण-लिंग,वचन,पुरुष इत्यादि के कारण जिन विशेषण में परिवर्तन होता है वह सारे विशेषण विकारी है। जैसे- **काला** घोड़ा , **काली** घोड़ी(लिंग)

अविकारी विशेषण- लिंग,वचन,पुरुष इत्यादि के कारणजिन विशेषण में परिवर्त नहीं होता है वह सारे विशेषण अविकारी है। जैसे-**सुन्दर** लड़की , **सुन्दर** लड़का(लिंग)

प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के चार प्रकार है-(1)सार्वनामिक विशेषण (2)गुणवाचक विशेषण (3)संख्यावाचक विशेषण(4)परिमाण बोधक।

सार्वनामिक विशेषण-जो सर्वनाम शब्द की भाँति किसी संज्ञा की विशेषता बताए,उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।जैसे- वह आदमी कुशल है। अथवाकौन व्यक्ति जायेगा।

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम **मैं,तू,आप** को छोड़कर शेष सभी सर्वनाम संज्ञा के साथ प्रयुक्त होने पर सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं। जैसे- (1)निश्चयवाचक-**यह** पेन, **वह** पेन,आदि।

(2)अनिश्चयवाचक-**कोई** पेन, **कुछ** लोग,आदि।

(3)प्रश्नवाचक- **कौन** व्यक्ति?

(4)संबंधवाचक- **जैसी** करनी **वैसी** भरनी आदि।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

(1)**मूलसार्वनामिक विशेषण**-जो सर्वनाम बिना किसी रूपांतरण के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, मूलसार्वनामिक विशेषण कहलाता है।जैसे- **वह** आदमी कुशल है।

(2)**यौगिकसार्वनामिक विशेषण**-जो सर्वनाम मूल सर्वनाम में प्रत्यय आदि जुड़ जाने से विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, यौगिकसार्वनामिक विशेषण कहलाता है।जैसे- **ऐसा** आदमी नहीं मिलेगा। अथवा **जैसी** करनी **वैसी** भरनी आदि।

गुणवाचक विशेषण-जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण,रूप,रंग आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक(कोई भी विशेषता) विशषण कहते हैं।जैसे-बाग़ में **सुन्दर** फुल है।**अच्छे** बच्चे बड़ो का आदर करते हैं।

इसमें सुन्दर तथा अच्छे गुण वाचक विशेषण है।इसके मुख्य रूप निम्नलिखित है-

(1)कालवाचक- **नया** पोशाक, **पुराना** घर।

(2)स्थानवाचक- **बनारसी** साड़ी, **नरोड़ा** वासी।

(3)आकारवाचक- **गोल** मैदान, **लंबा** आदमी।

(4)दशावाचक- **बूढ़ा** आदमी,**बिमार** व्यक्ति।

(5)रंगवाचक- **काला** कृष्ण,**गोरी** राधा।

(6)गुणवाचक- **सुंदर** फूल,**भला** आदमी।

संख्यावाचक विशेषण-जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)**निश्चित संख्यावाचक विशेषण**-एक,दो,तीन...

(ख)**अनिश्चत संख्यावाचक विशेषण**-कई,अनेक, बहुत...

संख्यावाचक विशेषण के निम्नलिखित **उपभेद है-**

(i)पूर्णांकबोधक- एक,दो, तीन,चार आदि।

(ii)अपूर्णंकबोधक- आधा, पोना, सवा आदि।

(iii)क्रमवाचक- पहला,दूसरा,तीसरा आदि।

(iv)आवृत्तिवाचक- दुगुना,चौगुना,दसगुना आदि।

(v)समूहवाचक- दोनों, चारों आदि।

परिमाणबोधक विशेषण-जिस विशेषण से किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध है, उसे परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)**निश्चित परिमाणबोधक विशेषण**- एक मीटर कपड़ा,दो सेर दूध।

(ख)**अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण**- थोड़ा पानी, बहुत धन।

विशेष- अधिकांश विशेषण संख्यावाचक और परिमाणबोधक दोनों होते हैं।वे एक-वचन संज्ञा के साथ आकर परिमाण-बोधक हो जाते हैं और बहुवचन संज्ञा के साथ संख्यावाचक बन जाते हैं।जैसे--

परिमाण-बोधक विशेषण	**संख्यावाचक विशेषण**
1.हमारे घर में **बहुत** घी है।	उस कक्षा में **बहुत** विद्यार्थी हैं।
2.**सब** दूध फट गया।	**सब** पेड़ हरेभरे हैं।
3.**आधा** धन बाँट दो।	**आधे** सदस्य अनुपस्थित हैं।

क्रिया

परिभाषा-(1)डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद-जिस शब्द से काम का करना या होना समझ़ा जाय उसे क्रिया कहते हैं।

(2)कामताप्रसाद गुरु- किसी वस्तु के विषय में विधान करनेवाले शब्द को क्रिया कहते हैं।

(3)डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल- उस विकारी शब्द को जो किसी कार्य का करना या होना प्रकट करे, क्रिया कहते हैं।

क्रिया के प्रकार- प्रयोग की दृष्टि से-(1)अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक (3) द्विकर्मक

(1)अकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो,उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे-श्याम लिखता है।अथवा सीता चलती है।

(2)सकर्मक क्रिया-जब क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पडता है तब उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- रमेश रोटी खाता है। अथवा मंगल बोझ उठाता है।

(3)द्विकर्मक- जिस सकर्मक क्रिया का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं,उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।जैसे-मां अपनी बेटी को कहानी सुनाती है।

व्युत्पत्ति के आधार पर क्रिया के भेद-(1) मूल क्रिया(रूढ़ क्रिया) (2) यौगिक क्रिया

(1)मूल क्रिया (रूढ़ क्रिया) -मूल धातु से बनी हुई क्रिया को मूल (रूढ़) क्रिया कहते हैं। जैसे-चल् धातु से चलना,चलेगा,चलेगी,चली आदि रूढ़ क्रियाएँ हैं।

(2)यौगिक क्रिया- जो क्रिया धातु के साथ दूसरे शब्द लगाकर बनाई जाती है अथवा एक से अधिक तत्वों से होती है, उसे यौगिक क्रया कहते हैं।जैसे- चल् से चलाना,चलवाना, चलचलाचल,चल सकना आदि।

यौगिकक्रिया के निम्नलिखित उपभेद-

(अ)प्रेरणार्थक क्रिया(ब)संयुक्त क्रिया(क)नामबोधक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया-कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करे,उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।जैसे-शिक्षक विद्यार्थी से किताब पढ़वाता है। बहुधा धातुओं से दो-दो प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं,पहली प्रेरणार्थक क्रिया में 'आ' और दूसरी में 'वाँ' जुड़ जाता है।

धातु	प्रेरणार्थक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
गिर(ना)	गिराना	गिरवाना
चल(ना)	चलाना	चलवाना
चढ़(ना)	चढ़ाना	चढ़वाना

संयुक्त क्रिया-जो क्रिया किसी दूसरी क्रिया या अन्य शब्द-भेद के योग से बनती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।जैसे-तुम मेरे घर प्रतिदिन आया करो। अब रोगी चल सकता है।संयुक्त क्रिया के दूसरे उपभेद-

(अ)सहायक क्रिया-दो क्रिया के योग में जो क्रिया मुख्य क्रिया से रूप को पूरा करने में सहायता प्रदान करती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं।जैसे-मैंने पढ़ा था। जिसमें पढ़ तथा था समय सूचित क्रिया।अर्थ की दृष्टि से सहायक सहायक क्रिया के उपभेद-

1.आरंभबोधक-श्याम खेलने लगा।

2.समाप्तिबोधक-श्याम खा चुका।

3.अवकाशबोधक-श्याम मुश्किल से सोने पाया।

4.अनुमतिबोधक-श्याम को खेलने दो।

5.नित्यताबोधक-श्याम खेलता रहा।

6.इच्छाबोधक-श्याम खेलना चाहता।

7.आवश्यकताबोधक-श्याम को घर जाना होगा।

(ब)पूर्वकालिक क्रिया-जब एक क्रिया समाप्त कर तुरंत दूसरी क्रिया शुरू हो तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे-श्याम ने खेलकर स्नान किया।

(क)नामबोधक क्रिया-संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रियी बनती है,उसे नाम बोधक क्रिया कहते हैं।

जैसे-संज्ञा तथा क्रिया से- अखियाँ मिलाना।,

विशेषण तथा क्रिया से -खुश करना।

(ड)क्रियार्थक क्रिया-जब संज्ञा क्रिया के अर्थ में प्रयोग हो तब वह संज्ञा क्रियार्थक क्रिया बनती है।

जैसे-टहलना स्वास्थ के लिए अच्छा है।

कारक

परिभाषा-

कारक-(1)संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट होता है,उसेकारक कहते हैं।

(2)वासुदेवनंदन प्रसाद-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका क्रिया से संबंध सूचित हो,उसे कारक कहते हैं।

(3)डॉ.उमेशचंन्द्र शुक्ल-जिसका क्रिया से सीधा संबंध हो,उसे कारक कहते हैं।

<u>विभक्ति-</u> संज्ञा या सर्वनाम का संबंध किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट करने के लिए जो अक्षर या चिह्न लगाया जाता है,उसे विभक्ति कहते हैं।

कारक	विभक्ति
(1)कर्ता	0,ने
(2)कर्म	0,को
(3)करण	से
(4)सम्प्रदान	को,के लिए
(5)अपादान	से
(6)संबंध	का,के,की,रा,रे,री
(7)अधिकरण	में,पर
(8)संबोधन	हे,अरे,अजी

इसप्रकार हिंदी में कुल आठ कारक हैं। विभक्तियों को कारक-चिह्न या परसर्ग भी कहते हैं।

कर्ता कारक-विभक्ति-0,ने

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध हो,उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे- बच्चे दौड़ते हैं। या स्मिता ने पुस्तक पढ़ी। बच्चे,स्मिता क्रिया करते हैं अतःदोनों वाक्य में कारक हैं।

कर्म कारक-विभक्ति-0,को

जिस वस्तु पर कर्ता का फल पड़े,उसके लिए प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम को कर्म कारक कहते हैं। जैसे- मंगल ने स्मिता को बुलाया। यहाँ मंगल कर्ता और उसके बुलाने का फल स्मिता पर पड़ता है,इसलिए स्मिता कर्म और को विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

करण कारक-विभक्तिः-से

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं।जैसे-राम ने रावण को बाण से मारा।वाक्य में बाण से मारेजाने का कार्य हुआ,अतःबाण कारक है। प्यास,भूख,जाड़ा,हाथ,कान तथा आँख आदि शब्द जब बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं,तो उनके साथ से विभक्ति नहीं लगती।जैसे-मैंने अपनी आँखों सारा दृश्य देखा।

संप्रदान कारक-विभक्तिः-को,के लिए

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप,जिसके लिए क्रिया की जाती है,संप्रदान कारक कहलाता है।जैसे- राम ने सीता के लिए साड़ी खरीदी। या राम ने सीता को फूल दिया।यहाँ पहले वाक्य में के लिए तथा दूसरे वाक्य में को विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अपादान कारक-विभक्तिः-से संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे अलगाव,आरंभ,तुलना आदि का बोध हो,अपादान कारक कहलाता है।

जैसे-गंगा नदी हिमालय से निकलती है।(आरंभ), पेड़ से पत्ता गिरा।(अलगाव), सीता का स्वभाव गीता से अलग है।(तुलना)आदि इसके उदाहरण हैं।

संम्बन्ध कारक-विभक्तिः-का,के,की

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप,जिसकास संबंध वाक्य के अन्य शब्द से हो,संबंध कारक कहलाता है। जैसे-राधा ने कृष्ण की बाँसुरी चुरा ली। अथवा राधा का मोहन।अथवा राधा के पायल।आदि उ इसके उदाहरण है।

अधिकरण कारक-विभक्तिः-में,पर

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप,जो क्रिया का आधार हो,अधिकरण कारक कहलता है।जैसे-ड़ाल पर कोयल कूकती है। अथवा कमरे में अतिथि बैठे हैं।

कभी-कभी विभक्ति-लोप से भी अधिकरण कारक बनता है।जैसे-इस जगह दुर्घटना हुई थी।या उस समय मुझे याद नहीं रहा। वाक्यों में जगह और समय अधिकरण कारक है,पर उनके आगे की विभक्तियाँ लुप्त हैं।

सम्बोंधन कारक-हे,अरे,अजी

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारना,चेतावनी देना या संबोधन करना आदि सूचित हो,उसे संबोधन कारक कहते हैं।

जैसे-हे ईश्वर! तुम्हीं रक्षक हो।, ए! तुम क्या करते हो? , अजी! सुनते हो?